ग्रहदर्शनार्थ नलिकाबन्धन-प्रकारः —

ज्ञात्वाशाः परखेचरे परमुखीं प्राक्खेचरे प्राङ्मुखीं
बिन्दोः कोटिमतो भुजं स्वदिशि तन्मध्ये प्रभांविन्यसेत्।
बिन्दोर्भगतशङ्कुमस्तकगते सूत्रे नले खे खगं
के बिन्दुस्थनरागतभागतकगते सूत्रे नले लोकयेत्॥

अन्वयः — आशाः ज्ञात्वा बिन्दो परखेचरे परमुखीं, प्राक्खेचरे प्राङ्मुखीं कोटिं विन्यसेत्। अतः स्वदिशि भुजं, तन्मध्ये प्रभां बिन्दोः भागतगाशङ्कुमस्तकगते सूत्रे नले खे खगं लोकयेत्। बिन्दुस्थनरायभागतकगते सूत्रेनलेके।

तारा — आशाः दिशः, ज्ञात्वा पूर्वोक्तप्रकारेण दिक्साधनं विधाय, बिन्दोः वृत्तकेन्द्रात्, परखेचरे पश्चिम-कपालस्थे सूर्यास्थितरे, परमुखीं पश्चिमाभिमुखीं, प्राक्-खेचरे पूर्वकपालस्थे ग्रहे, प्राङ्मुखीं पूर्वाभिमुखीं, कोटिं पूर्वसाधितां कोटिं, विन्यसेत् दद्यात्। अतः अस्मात् कोट्यग्रतचिह्नात्, स्वदिशि भुजस्याभिप्रेतायां दिशि, भुजं पूर्वोक्तप्रकारेण साधितं विन्यसेत्। तन्मध्ये वृत्तकेन्द्रभुजा-ग्रयोः मध्ये, प्रभां छायां, विन्यसेत्, बिन्दोः वृत्तकेन्द्रात्, भागतगशङ्कुमस्तकगते छायागतभागस्थितस्य शङ्कोः अग्रगामिनि, सूत्रे नले नालिकायां, खे गगने, खगं ग्रहं, लोकयेत् पश्येदित्याशयः। तदनु बिन्दुस्थनरागतभागतकां केन्द्रस्थशङ्कोः सम्मुखस्थच्छायाग्रयोर्गते सूत्रे, नले नलि-कायां के जले, खगं लोकयेत्।

भावार्थः — समतल बनायी हुई भूमि पर अपनी इष्ट-छाया के अनुसार सूत्र (तागा) से एक वृत बनाकर उसमें चारों दिशाओं के निशान लगाये। फिर वृत के मध्य से ग्रह की स्थिति के अनुसार (यदि ग्रह पश्चिमकपाल में हो,

P.T.O

31-10-20
2

तत्पश्चात् अपने देश की पलभा को दक्षिण मानकर उसमें पूर्वोक्त मध्यभुज दक्षिण हो, तो जोड़ दे तथा उत्तर हो तो घटा दें। जो शेष अंक मिलें वे अंगुलादि दक्षिणभुज होते हैं। यदि मध्यमभुज उत्तर होकर पलभा की तुलना में अधिक हो, तो उसमें से पलभा की घड़ियों को घटाएँ, जो शेष रहे अंगुलादि उत्तरभुज होता है। फिर छाया का वर्ग करके उसमें से भुजा का वर्ग घटाएँ। जो शेष रहे, उसका वर्गमूल निकालें। वह कोटि होती है।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ०सं०महावि० सुखसेना
पूर्णियाँ।

तो पश्चिम की ओर तथा पूर्वकपाल में हो, तो पूर्व की ओर) अंगुलादि कोटि दें। ग्रहस्थिति का निर्णय इसके पूर्वश्लोक के अनुसार समझें। तदनन्तर कोटि के अग्रभाग से लम्ब रेखा पर भुजांगुलों को (यदि भुज दक्षिण हो, तो दक्षिण की ओर यदि उत्तर हो, तो उत्तर की ओर) दें। इसके बाद भुज के अग्रभाग से वृत्त के केन्द्र तक एक कर्ण रेखा खींचें। इसको दायां करते हैं। फिर दायां के अगले भाग में १२ अंगुल का शंकु रखकर उस शंकु के अग्रभाग और वृत्त के मध्यभाग में एक सूत्र रेखा खींचें। इस सूत्र रेखा पर शंकु के अगले भाग में एक नालिका रखें। उस नलिका से आकाश की ओर देखने पर ग्रहदर्शन होता है।

दूसरा प्रकार – यदि जल के मध्य में ग्रहदर्शन करने की इच्छा हो, तो वृत्त के मध्य में १२ अंगुल का शंकु रखकर शंकु के अगले भाग से दायां के अग्रभाग तक एक सूत्र ले जायें। उस सूत्र रेखा पर शंकु के अगले भाग में एक नलिका रखें तथा दायां के अगले भाग में पानी से भरा एक पात्र रखें और उस पात्र में उक्त नलिका से देखने पर अभीष्ट ग्रह के दर्शन होते हैं।

डॉ० सुदिवर कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुखसैना,
पूर्णियाँ।

गणकाध्यायम्
त्रिप्रश्नाधिकार

शास्त्री-III

31-10-20

1

नतिकाबन्धनाय भुजकोटिसाधनप्रकार :—

क्रान्तिः स्फुटाऽभिमतकर्णगुणाक्षकर्ण-
निघ्नीखखाद्रिहृदपक्रमदिग्भुजः स्यात्।
संस्कारितो यमदिशाक्षभया स्फुटोऽसौ
तद्वर्गभाकृतिवियोगपदं च कोटिः॥

अन्वयः— स्फुटा क्रान्तिः अभिमतकर्णगुणा अक्षकर्णनिघ्नी ततः खखाद्रिहृत अपक्रमदिग्भुजः स्यात्। असौ यमदिशा अक्षभया संस्कारितः स्फुटः, तद्वर्गभाकृतिवियोगपदं च कोटिः।

तारा— शरसंस्कृता क्रान्तिः स्फुटा भवति, सा स्फुटा क्रान्तिः अभिमतकर्णगुणा स्वेष्टकर्णगुणिता, पुनः अक्षकर्णनिघ्नी पुनः अक्षकर्णेन गुणिता, ततः खखाद्रिहृत सप्तशतैर्भक्ता करणीया, तदा अपक्रमदिग्भुजः स्पष्ट-क्रान्तिसम्बन्धिनीदिक् भुजः स्यात्। असौ भुजः यम-दिशा अक्षभया च संस्कारितः लब्धसंस्कारः, स्फुटः भवति। तद्वर्गभाकृतिवियोगपदं स्फुटभुजवर्गच्छाया-ऽऽकृतिवर्गान्तरात् पदं, च कोटिः स्यात्।

भावार्थः— जिस ग्रह का नतिकाबन्ध करना हो, उस ग्रह की क्रान्ति का अपने शर से संस्कार करें। इससे क्रान्तिस्पष्ट साधन होता है। इसके बाद उस स्पष्ट-क्रान्ति को अपने इष्टकर्ण से गुणा करें। जो गुणनफल प्राप्त हो, उसको पुनः अक्षकर्ण से गुणा करें। इसका जो गुणनफल हो, उसमें ख० ख० अद्रि 6 = 600 का भाग दें। जो लब्धि मिले, वह क्रमशः अंगुलादि मध्यमभुज होता है। इसको स्पष्ट क्रान्ति के समान उत्तर अथवा दक्षिण समझें।

P.T.O